स्वर्ण नियमावली

मेरे अंतःकरण की आवाज़:

1. उन्नति एवं विपत्ति के क्षणों में अपने आदर्शों को न छोड़ें

2. जीवन के संघर्षों एवं विषम परिस्थितियों में दृढ़ विश्वास बनाए रखें

3. अपने मित्रों के राज़ को हर स्थिति में राज़ रखें

4. चेतनापूर्वक प्रेम में रहें

5. प्राण जाए पर वचन न जाए

6. हर परिस्थितियों में मुस्कुराते हुए जीवन जिएं

7. जब आपके पास कुछ हो तो उनके बारे में सोचें जो उनसे वंचित हों

8. अपना सम्मान हर कीमत पर बनाए रखें

9. अपने आदर्शों को सभी परिस्थितियों में सर्वोच्च रखें

10. जो आप पर आश्रित हों उनकी उपेक्षा कभी भी न करें

रजत नियमावली

मेरे अंतःकरण की आवाज़:

1. कर्तव्य को धर्म के समान पवित्र समझें

2. सभी अवसरों पर समझदारी से काम लें

3. अपने विचारों में लोगों का सही अनुमान लगाएं

4. दूसरों की उम्मीद से ज्यादा अपने को न समझें

5. हर रूह की भावनाओं का सम्मान करें

6. जो अपने समान न हो उसे चुनौती न दें

7. अपनी उदारता का प्रदर्शन न करें

8. जो आपकी सहायता न करे उससे सहायता न मांगे

9. अपनी कमियों को अपने आत्म-सम्मान से नष्ट करें

10. विपत्ति के समय हौसला बुलंद रखें

ताम्र नियमावली

मेरे अंतःकरण की आवाज़:

1. अपने दायित्वों को पवित्र समझें

2. सबसे विनम्र बने रहें

3. ऐसा कुछ न करें जिससे आपके ज़मीर को पछतावा हो

4. जरुरतमंदों की सहायता स्वेच्छा से करें

5. जो आपसे प्रेरणा प्राप्त करते हो उन्हें कभी छोटा न समझें

6. दुसरों का आकलन अपने नियमों के अनुसार न करें

7. अपने सबसे बड़े शत्रु के प्रति भी द्वेष भाव न रखें

8. किसी को भी गलत कर्म करने के लिए प्रेरित न करें

9. पक्षपात न करें

10. सदा विश्वसनीयता की कसौटी पर खरे उतरें

लौह नियमावली

मेरे अंतःकरण की आवाज़:

1. झूठा दावा न करें

2.किसी की अनुपस्थिति में उसकी बुराई न करें

3.किसी की अज्ञानता का अनुचित लाभ न लें

4.अपने अच्छे कार्यों पर गर्व न करें

5.दुसरे की संपत्ति पर अपना दावा न करें

6.दूसरों को न धिक्कारें, ये उन्हें अपनी गलतियों में दृढ़ बना देता है

7. अपने कार्यों के प्रति अकर्मण्यता न बरतें

8.सभी जरूरतमंदों की सहायता सेवा भाव तथा निष्ठा से करें

9. उन कार्यों में जिसे किसी को हानि होती हो उन में लाभ की अपेक्षा न करें

10.अपने लाभ के लिए दूसरों को नुकसान न पहुँचाएं